संजय की कलम से ..

पहचान आदरणीया माँ सरस्वती की

हमारे इस संगमयुग के नये जीवन में आदरणीय, माननीय एवं सराहनीय भी एक-से-ऊपर-एक और कई हैं। हमारे यहाँ योगी भी हैं, महायोगी भी, तपस्वी भी हैं, महातपस्वी भी। ज्ञान-निष्ठ भी हैं, महाज्ञानी भी हैं। एक से बढ़कर एक उज्ज्वल चरित्र वाली गुण मूर्तियाँ हैं। कोई निर्मल स्वभाव के अतिरिक्त शान्तमूर्त हैं तो कोई सन्तुष्टमणि। कोई शीतला हैं तो कोई दुर्गा। कोई ज्ञान की गजगोर करने वाली हैं तो कोई शंखध्वनि। कोई अन्नपूर्णा हैं, मातृवत् पालना करने वाली हैं तो कोई सती-साध्वी, मन-चित्त से गौरी माँ। अत: उन सभी का तदनुसार आदर भी होना चाहिए। जन्म-जन्मान्तर जिनकी भक्ति-पूजा की, अब उनके प्रति श्रद्धा और भावना तो होनी ही चाहिए। उनमें से किसी का अपमान करना तो अपने सिर पर मानवी कोप और प्राकृतिक प्रकोप आमन्त्रित करने-जैसा है।

माँ सरस्वती का स्थान और मान

इनमें भी प्रजापिता ब्रह्मा के पश्चात् जगदम्बा सरस्वती का स्थान तो अपनी रीति से सर्व महान है। यज्ञ की स्थापना में उनकी शिरोमणि पवित्रता, घोर तपस्या, अटूट निश्चय इत्यादि की तो जितनी महिमा की जाये उतनी ही कम है। जिन्होंने उनके मुख-मंडल को देखा है, उनसे पूछिये कि वे कुदरत की क्या कमाल थी! उनको देख कर तो महा अज्ञानी भी कह उठता था – ''माँ, ओ माँ! तेरी ठण्डी छाँ! तेरी शीतल बाँ! तेरी हाँ में हाँ, ओ माँ! तू ले जा चाहे जहाँ, हमें दिखता आसमाँ, भूल गया जहाँ! माँ ओ माँ!'' कैसी थी वो भीनी-भीनी मुसकराहट जिसे शिवपिता और ब्रह्माबाबा ने ज्ञान-रंग से चित्रांकित किया! उस मुसकराहट को देख कर तो रोना सदा के लिए बन्द हो जाता। वे निर्मल नैन जिनसे योग-तपस्या की प्रकाश-रश्मियाँ जिस पर पड़तीं, उसे भी योग के पंखों पर बिठा कर फ़र्श से अर्श पर ले जातीं। उनका डील-डौल ही ऐसा था कि वे एक अहिंसक सेना की सेनापति दिखाई देती थीं। उनकी चाल-ढाल ही ऐसी थी कि जिसमें 'योग' और 'राज' मिलकर उसे इतना भव्य, दिव्य, सुसभ्य बनाते थे कि बात मत पूछो। जिस किसी को भी उनका स्पर्श मिला, उसने अनुभव किया कि उसकी ऐन्द्रिय चंचलता शान्त हो चली। जिस समय किसी ने उनके कमरे में प्रवेश किया तो देखा कि वे समाधिस्थ हैं, तपस्यारत हैं अथवा हंस-माता के रूप में ज्ञान-रत्नों को धारण किये हैं। क्या जादू था उनकी तस्वीर में! क्या सुगन्ध थी उनके व्यवहार में! कैसी महक थी

अमृत-सूची

- कर्मों का खाता *(सम्पादकीय)* 5
- मातेश्वरी नन्हीं-सी बच्ची 7
- मम्मा के मस्तक में आत्मा 10
- जगदम्बे जगत जननी *(कविता)* 10
- ईश्वरीय कारोबार में.....11
- मैं मम्मा से वचनबद्ध हुई 14
- 'पत्र' संपादक के नाम 16
- परमात्म शक्ति द्वारा 17
- शिव ज्ञान सागर 19
- दूसरों के दर्द मिटाने से.....20
- आँखों में पानी 21
- भक्ति से ज्ञान तक 22
- सदा शक्तिशाली कैसे बनें ...24
- मीठी मम्मा *(कविता)* 25
- जीवन हो तो ऐसा 26
- बाबा ने बनाया डबल डॉक्टर .27
- आबू में रक्त संचय 28
- जगदम्बा माँ *(कविता)* 29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- ईश्वर का बच्चा होने का 32
- क्या खूब कहा *(कविता)*..... 32
- जानिए पीस ऑफ माइंड 33
- बीमारी में बाबा की मदद 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

उनके कर्मों में! जिसने उन्हें परिचय-युक्त दृष्टि से देखा, उसका तो जीवन ही सफल हो गया। अत: हम सभी का सौभाग्य है कि हम ब्रह्माकुमार या ब्रह्मा-वत्स भी हैं और सरस्वती-पुत्र अथवा सरस्वती-पुत्री भी हैं। लोग जिस देवी को विद्यादायिनी के रूप में विद्या का वरदान पाने के लिए पुकारते हैं, स्वयं उन्हीं के पुनीत हाथों से हमने अमृत पीया, स्वयं उनकी मुख-वीणा से ज्ञान की स्वर्ग-सुखदायिनी झंकार सुनी। उनके वरद् हाथों ने हमारे सिर पर प्यार बरसाया। उनकी ज्ञानमयी गोद के हम सुत हैं। हमारे इन नेत्रों ने सरस्वती को इस धरा पर खड़े, बैठे, चलते देखा। हमने यदि और कुछ भी न पाया हो तो यह जो देखा और पाया, क्या यह कम बात है? संसार में इससे अधिक सुन्दर दृश्य और कोई हो सकता है क्या? ज़मीन-आसमान सूक्ष्म-दिव्य नाद करते थे जब वे चलती थीं। चंदा भी देर से जाता था जब वो रात-रात भर शिवपिता को याद करती थीं। अरे, वे ही तो पार्वती थीं जिन्होंने पर्वत पर तपस्या की शिव के लिये। गौरी वे ही तो थीं। हिमराज की वह पुत्री ज्ञान-गुण की दृष्टि से अपार सुन्दर थीं। जिसने उन्हें साक्षात् नहीं देखा, उसने क्या देखा? जिसे संसार आदि-देवी, अम्बे मैय्या, ईव, हव्वा इत्यादि नामों से याद करता है, उन्हें देखने का यही तो मौका था। हम उनके संग-संग रहे, उनके हाथों से पले, उनकी छत्रछाया में खेले। वे दिन कितने निराले थे! वह हमारे सौभाग्य की कितनी सुन्दर घड़ी थी। उस-जैसा रोमांचकारी अनुभव तो और कोई हो ही नहीं सकता। भारत और भारत की नारी की वे शान थीं! योगियों में वे सर्व महान थीं, धर्म-दर्शन-मज़हब और ईमान थीं। वे मादर-ए-ज़हान (World Mother) थीं। वे न होतीं तो कुछ भी न होता। वही तो प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा परमात्मा शिव का ईश्वरीय ज्ञान सुनाकर सभी यज्ञ-वत्सों को समझाती थीं। वही तो उनके सामने ज्ञान एवं योग का नमूना थीं। सभी यज्ञ-वत्सों को संभालने के लिए वही तो निमित्त थीं। उन्हें प्रजापिता ब्रह्मा के समकक्ष स्थान पर बैठकर प्रतिदिन ज्ञान-वीणा वादन का अधिकार था।

उन्हीं मातेश्वरी सरस्वती ने दुर्गा का रूप धारण करके यज्ञ-दुर्ग की रक्षा की, विघ्नों का सामना किया। जनता और सरकार द्वारा आई विपत्तियों को झेला। भिन्न-भिन्न संस्कारों वाले यज्ञ-वत्सों को संस्कारों की भट्ठी में से उन्हीं ने ही उज्ज्वल किया और एक-एक को ज्ञान-लोरी, ज्ञान-पालना दी। वही तो प्रथम शीतला माँ, सन्तोषी माँ और अन्नपूर्णा माँ थीं।

स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा उन्हें माला के युग्म मणके में स्थान देते, उन्हें 'यज्ञ-माता' की उपाधि देते तथा आदरणीया मानते थे। उन्हीं को आगे रख कर वे उदाहरण देते थे कि सभी ''पुरुषों'' को चाहिए कि बहनों-माताओं को आगे रखें। बाबा स्वयं कई बार उन्हें रेलवे स्टेशन तक छोड़ने जाते। एक बार उन्होंने कहा कि छोटी-छोटी, पतली-पतली कुछ लकड़ियाँ चुनकर ले चलो तो माता जगदम्बा को अर्पित करना और सभी मिलकर माँ की महिमा का गीत गाना। उन्होंने मुझसे कहा, ''बच्चे, क्या तुम जगदम्बा की महिमा का गीत जानते हो और आरती कर सकते हो?'' मैंने कहा कि ''कुछ तो याद है''। तब हमने ऐसा ही किया। हम काठियाँ चुन कर उनका गट्ठा बना कर ले गये। उस दिन माँ हमारे साथ घूमने नहीं गई थीं। जब हम पाण्डव भवन पहुँचे तो माँ वहाँ बाबा की आगवानी के लिये खड़ी थीं। हमने वह गट्ठा उनके चरणों में निकट रख कर, हाथ जोड़ कर, अर्ध-खुले नेत्रों से और भाव-विभोर होकर उनकी आरती करनी शुरू कर दी। अचानक ही यह देखकर माँ मुसकरा रही थीं और कुछ हँस भी रही थीं.....। अरे, बस आनन्द आ गया! हमारी भक्ति पूरी हो गई। हमने भक्ति को माँ सरस्वती को समर्पित कर दिया। वह ऐसा दृश्य था कि उसका

(शेष..पृष्ठ 16 पर)

'पत्र' संपादक के नाम

फरवरी, 2014 अंक में 'प्रेम के सागर का प्रेम' लेख पढ़ा। सच कहा है, जिसने खुद से और खुदा से प्यार करना सीख लिया उसने सब कुछ सीख लिया। 'बेहद की वैराग वृत्ति' लेख में बहुत सच्ची बात कही गई है। आदमी माया के जाल में फंस कर भला-बुरा भूल जाता है मगर इस लेख ने पुन: सच्चाई सामने ला दी।

– प्राणलाल कोटक, आकोट

मार्च, 2014 अंक में 'मन को दबाओ नहीं, समझाओ' लेख से सभी प्रश्नों के उत्तर हल हो गये। बड़े लड़के से मेरी अनबन चल रही थी। उसका समाधान बाबा ने इस लेख के माध्यम से भेज दिया। अब बाबा का शुक्रिया किन शब्दों में करूँ, वर्णन नहीं किया जा सकता।

– डा.रामनारायण बघेल,
मिश्राना-पटियाली, कासगंज

मार्च, 2014 अंक में संम्पादकीय लेख 'आपदा में आत्मनियंत्रण' जब पढ़ा तो ऐसा लगा कि सम्पादक जी मेरे घर की परिस्थितियों को देख-सुन रहे थे। आपके इस लेख से हमें शान्ति ही नहीं बल्कि शिक्षा भी मिली। कोटि-कोटि अभिनंदन।

– ब्र.कु.गंगाराम,
माधौगंज, हरदोई (उ.प्र.)

ज्ञानामृत ने मेरे हृदय में जगह बना ली है। अगली पत्रिका की आश लगाये रहता हूँ। मार्च, 2014 अंक में 'तोल-तोल कर बोल' लेख में मैं खो गया। लेख में मानव के लिए संकेत है कि उसे युक्ति-युक्त बोलना है। लेख ने व्यवहारिकता को सम्बल दिया है, साथ-साथ डगमगाये मनुष्य को जाग्रत भी किया है। मैं लेखक की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ।

– अत्तर सिंह, सूरजपुर, अलीगढ़

अप्रैल, 2014 अंक में प्रश्न-उत्तर लेख में आदरणीया दादी जानकी जी के उत्तरों ने बहुत-सी उलझनों को सुलझा दिया। 'भाग्यविधाता ने बनाया भाग्यवान' लेख द्वारा बाबा की शक्तियों के चमत्कारिक प्रभाव दिखाई दिए। 'अन्न का सदुपयोग', 'असीम बल है शुभभावनाओं में' लेख पढ़कर जीवन में कुछ करने के लिए एक शक्ति प्राप्त हुई।

– सुनील कुमार दाधीच,
बून्दी (राज.)

संजय की कलम से...पृष्ठ 4 का शेष

तो न चित्रण हो सकता है, न वर्णन। हमें न धरती भासित हो रही थी, न समय की सुध थी। चेतन सरस्वती हमारे सामने थीं। साक्षात् सरस्वती माँ को इन नैनों ने निहारा और इस मुख ने हृदय के भावों को व्यक्त किया। क्या समझ सकते हो कि माँ ने कितना प्यार किया होगा?

मैं लगभग 50 देशों में गया हूँ। रूप-लावण्य में अनेकानेक सुन्दर नारियाँ भी देखी होंगी क्योंकि आँखें बन्द करके तो यात्रा नहीं करता था। विद्वता, समाज सेवा, प्रशासन, वक्तृत्व में अग्रणी महिलाओं को भी देखा परन्तु माँ की दिव्यता, उनकी शालीनता, उनका सौन्दर्य स्वर्गिक था। उनका विवेक अद्वितीय था। वे मानवता से ऊपर उठ कर पवित्र-पुनीत हंस वर्ण की थीं। उन्हें देख कर कोई पातक हो, घातक हो या चातक, सभी कहेंगे – ''माँ''। वे पृथ्वी पर होते हुए भी पृथ्वी पर नहीं थीं। उनकी आध्यात्मिक चेतना, उनका योग-प्रकाश ऐसा था कि देखने वाला भी शरीर को भूल कर आत्मनिष्ठ हो जाता था। आत्मनिष्ठ न भी हो तो भी उसमें आध्यात्मिक चेतना जाग उठती थी। कम-से-कम थोड़े समय के लिये तो उसके तमोगुणी और रजोगुणी संस्कार बन्द हो जाते थे और उनकी जगह सतोगुण का उदय हो जाता था। ❖